

वैज्ञानिक डॉ. आरए मशेलकर ने सुनाए संस्मरण, युवाओं को दिया प्रेरक उद्बोधन

अमेरिकी कंपनी से लड़कर लाए हल्दी-बासमती चावल का पेटेंट

वेधड़क | जयपुर

पद्म विभूषण, पद्म भूषण और पद्मश्री से सम्मानित वैज्ञानिक डॉ. आर ए मशेलकर ने शुक्रवार को जेके लक्ष्मी पंत यूनिवर्सिटी के वार्षिक कार्यक्रम में शिरकत की। डॉ. मशेलकर को जेकेएलएल्यू लॉरिएट अवॉर्ड से नवाजा गया। मशेलकर देशभर से आए स्टूडेंट्स, प्रोफेसर, वैज्ञानिक एवं बिजनेस पर्सन से रुबरू हुए। डॉ. मशेलकर को पेटेंट मैन के नाम से जाना जाता है जब उनके नेतृत्व में सीएसआईआर ने हल्दी और बासमती चावल के अमेरिकी कंपनी का पेटेंट रद्द करवाया था।



तीन साल की लंबी लड़ाई लड़कर जीता पेटेंट

यूएस पेटेंट एंड ट्रेडमार्क ऑफिस ने 1994 में मिसिसिपी यूनिवर्सिटी के दो रिसर्चर्स सुमन दास और हरिहर कोहली को हल्दी के एंटीसेप्टिक गुणों के लिए पेटेंट दे दिया था। सीएसआईआर ने इसके खिलाफ केस लड़ा। उस समय

सीएसआईआर के अध्यक्ष मशेलकर थे। भारत ने दावा किया था कि हल्दी के एंटीसेप्टिक गुण भारत के पारंपरिक ज्ञान में आते हैं और इनका जिक्र तो भारत के आयुर्वेदिक ग्रंथों में भी है। सीएसआईआर ने अमेरिका के दावे को मानने से इनकार कर दिया

था। सीएसआईआर ने कहा था कि हल्दी पिछली कई सदियों से भारत में लोगों के घावों को ठीक करने के लिए प्रयोग की जा रही है। इसके बाद पीटीओ ने अगस्त 1997 में दोनों रिसर्चर्स का पेटेंट रद्द कर दिया कि दावे स्पष्ट और प्रत्याशित थे।

बासमती का पेटेंट: यूएस पेटेंट कार्यालय ने बासमती चावल के एक स्ट्रेन के लिए टेक्सास की कंपनी को बासमती राइस लाइन्स एंड ग्रेन शीपिंग उपन्यास से 'राइसटेक' को एक पेटेंट प्रदान किया था। 1997 में, अपने पेटेंट आवेदन में राइसटेक ने यह भी स्वीकार किया कि अच्छी गुणवत्ता वाले बासमती चावल पारंपरिक रूप से उत्तरी भारत और पाकिस्तान से आते हैं। कानूनी लड़ाई के बाद 2002 में राइसटेक ने 15 दवाओं (20 में से) को वापस ले लिया।

2020 वर्ष रहा भारतीय साइंस के नाम

डॉ. आर ए मशेलकर कि कोरोना काल का 2020 भारतीय विज्ञान के नाम रहा। जब कोरोना वायरस आया तो उसके बारे में किसी को भी जानकारी नहीं थी, न ही उसके स्ट्रक्चर के बारे में जानकारी थी। इससे पूर्व चिकित्सा का सामान डायग्नोसिस चीन से आयात करते थे जो पूर्ण रूप से सही नहीं मिलता था, लेकिन कोरोना के कारण 6 सप्ताह में ही भारत में निर्माण शुरू हुआ। पीपीई किट से लेकर कोरोना की वैक्सीन बनाई, जो देश भर के साथ अन्य देशों में भी निर्यात की गई थी। भारतीयों ने कम खर्च में अच्छी टेक्नोलॉजी बनाने की खूबी है।